PM SHRI
Creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st Century skills

Mid Day Meal Scheme

NIPUN BHARAT

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

जनपद प्रशासन सम्भाल

क ख ग घ मिशन

कहानी

गीत/ गतिविधि

खेल

घर (जैसा वातावरण)

बेसिक शिक्षा सम्भल

'क ख ग घ मिशन'

- क-कहानी द्वारा शिक्षण
- ख-खेल द्वारा शिक्षण
- ग-गीत/गतिविधि द्वारा शिक्षण
- घ-घर जैसे वातावरण में शिक्षण
- मिशन के अंतर्गत 'अ आ इ ई' के आधार पर शिक्षक कार्य रहे हैं-

अ-अनुकरण, आ-आदर्श, इ-इष्ट (विद्यार्थियों के बीच बैठकर, बच्चे बनकर, बच्चों की रुचि के अनुसार पठन-पाठन) ई-ईर्ष्या विहीन (किसी से ईर्ष्या नहीं) शिक्षण।

समग्र शिक्षा में पुनरुत्थान

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार समग्र शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं, बौद्धिक, सौंदर्यात्मक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिकता का विकास करना है।
- 'क ख ग घ मिशन' के द्वारा भी समग्र शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के साथ-साथ जनपद सम्भल में शैक्षिक पुनरुत्थान का कार्य किया जा रहा है।

(शिक्षक)

'क ख ग घ मिशन'
और
समग्र शिक्षा में पुनरुत्थान

(छात्र)

(अभिभावक)

शिक्षा के त्रिकोण को शक्तिशाली बनाना जिसमें छात्र, शिक्षक एवं अभिभावक सम्मिलित है|

परिचय

- **'क ख ग घ मिशन'** जनपद सम्भल उत्तर प्रदेश में शैक्षिक क्रांति हेतु एक मिशन है जो भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार, निपुण भारत, कायाकल्प, पी.एम. श्री, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निर्मित है।
- यह मिशन क-कहानी, ख-खेल, ग-गीत/गतिविधि, घ-घर जैसे वातावरण में शिक्षा और खेल के अवसर प्रदान कर रहा है
- इस मिशन का उद्देश्य **राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020** तथा **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम, 2022** को पूर्णतया लागू करना है।

पी.एम. श्री (PM SHRI)

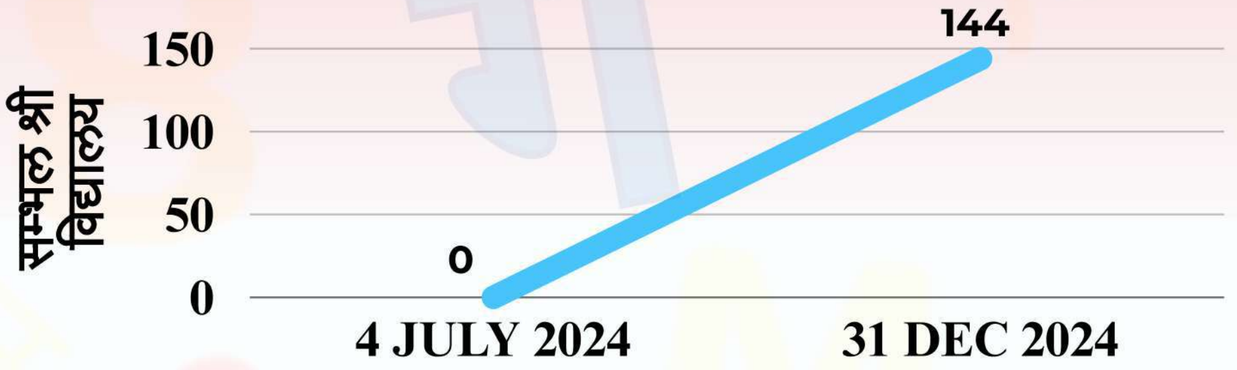

सम्भल श्री (SAMBHAL SHRI)

- परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए 'क ख ग घ मिशन' महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है ।
- **स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस 4 जुलाई, 2024** के अवसर पर 'क ख ग घ मिशन' को प्रारंभ किया गया। इस मिशन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है। 31 दिसंबर, 2024 तक **16 पी.एम. श्री विद्यालय** और **144 सम्भल श्री विद्यालयों** सहित कुल 1289 विद्यालय को इस मिशन से संतृप्त कर लिया गया।
- क ख ग घ चमक : इसे **4 जुलाई, 2024 को 1762 आँगनवाड़ी केंद्रों** में आरंभ किया गया जिसे विश्व पुस्तक दिवस, **23 अप्रैल, 2025** के अवसर पर **शत प्रतिशत संतृप्त** कर लिया गया।

‘क ख ग घ मिशन’ की प्रासंगिकता/पूर्व स्थिति

- जनपद में 1289 परिषदीय विद्यालय, 10 कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय तथा 1762 आँगनवाड़ी केंद्र संचालित हैं किंतु विद्यालय में नामांकन स्थिति, विद्यार्थियों की उपस्थिति, ठहराव,भौतिक संरचना, विद्यालयों का उबाऊ वातावरण, खेल के मैदानों की स्थिति, पुस्तकालय का उपयोग, बाल केंद्रित शिक्षा की स्थिति अत्यंत चिंताजनक थी। जिसके फलस्वरूप शिक्षकों के आत्मविश्वास में कमी थी। 165 विद्यालयों में छात्रों की संख्या 50 से कम थी और खेल के मैदान बहुत कम थे।
- प्राथमिक शिक्षा में सुधार हेतु, विद्यालयों की भौतिक संरचना में उन्नति हेतु, नामांकन एवं उपस्थिति में वृद्धि, विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में सुधार, खेल के मैदानों की उपलब्धता, पुस्तकालय के पूर्ण उपयोग, संगीत-गीत-गतिविधि से सरस वातावरण के निर्माण,पाठ्य सहगामी क्रियाओं को कराने हेतु ‘क ख ग घ मिशन’ को प्रारंभ किया गया है।

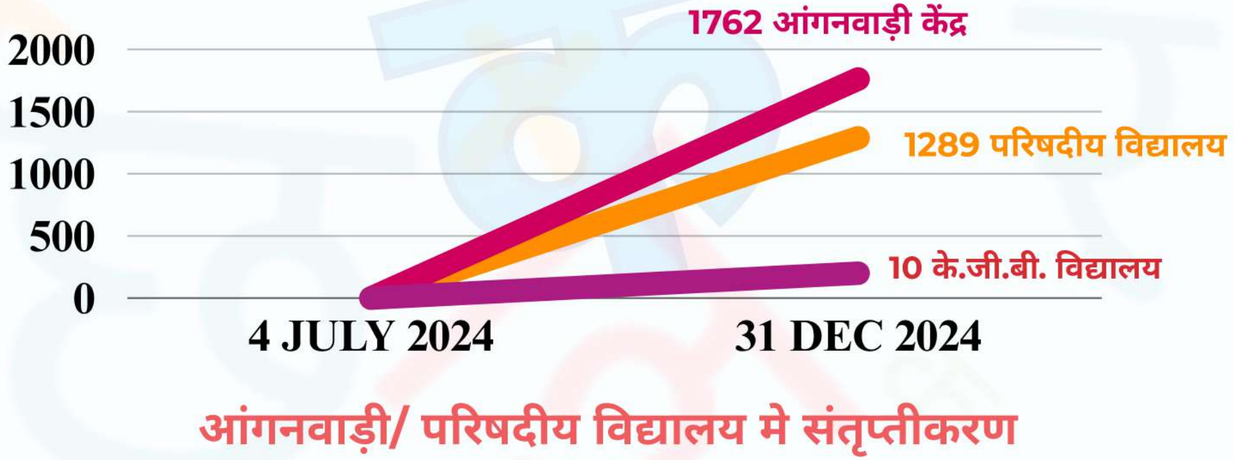

आंगनवाड़ी/ परिषदीय विद्यालय मे संतृप्तीकरण

अंतराल विश्लेषण (गैप एनालिसिस)

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 जिसका मुख्य उद्देश्य समग्र शिक्षा के माध्यम से वैश्विक नागरिकों का निर्माण और भारतीय जड़ों एवं गौरव से बंधे रहना है जो तर्क संगत विचार और कार्य करने में सक्षम हो, जिसमें करूणा, सहानुभूति, साहस, लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन, रचनात्मक कल्पना शक्ति और नैतिक मूल्य हों।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम, 2022 के अनुसार समग्र शिक्षा का विकास हो तथा विद्यार्थियों में जीवन कौशल विकसित हो।
- जनपद सम्भल के विद्यालयों में शिक्षक, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के मध्य अंत:क्रियाएं न होने के कारण शैक्षिक उपलब्धियों की प्राप्ति नहीं हो पा रही थी। विद्यार्थी रुचिपूर्वक शिक्षा ग्रहण करने में चुनौतियों का सामना कर रहे थे। विद्यालयों में क ख ग घ संबंधी गतिविधियों के अभाव में, शैक्षिक संसाधनों एवं शिक्षण प्रक्रिया में रोचकता की कमी थी।

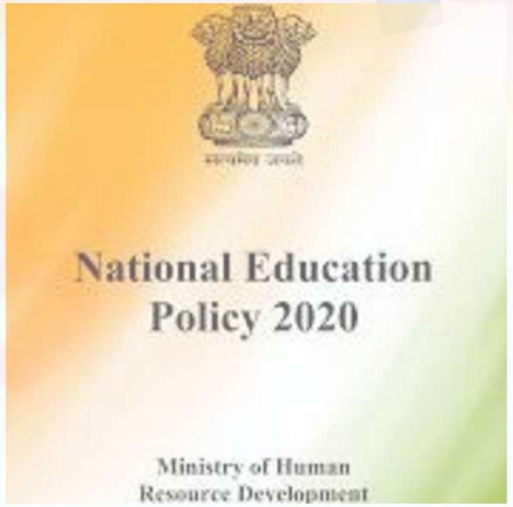

National Curriculum
Framework

उपलब्ध संसाधनों में मिशन के द्वारा कार्य

- 'क ख ग घ मिशन' शून्य निवेश नवाचार और शिक्षक प्रशिक्षण पर आधारित है जो कि निपुण भारत, पी.एम. श्री, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के उद्देश्यों को प्राप्त करने का आधार है।
- जनपद सम्भल के विद्यालयों में उपलब्ध संसाधनों एवं आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए मिशन शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाकर शैक्षणिक विकास का कार्य कर रहा है।
- 'क ख ग घ मिशन' लागू होने के उपरांत जनपद सम्भल के परिषदीय विद्यालयों में नामांकन, उपस्थिति एवं ठहराव में वृद्धि तथा ड्रॉपआउट दर में कमी हो रही है।
- मिशन का मूल आधार कहानी, खेल, गीत/गतिविधि, घर जैसा वातावरण है। यह चारों स्तंभ विद्यार्थियों को रोचक लगते हैं।
- अधिकांश विद्यालयों मे सेंड-बेन्ड बनाए गए।
- इनके आधार पर शिक्षण विद्यार्थियों को आनंदित करता है, जिससे विद्यार्थी प्रतिदिन विद्यालय आना पसंद करते हैं।
- 'अ आ इ ई': मिशन के अंतर्गत शिक्षक अ-अनुकरण, आ-आदर्श, इ-इष्ट(विद्यार्थियों के बीच बैठकर, बच्चे बनकर, बच्चों की रुचि के अनुसार पठन-पाठन) ई-ईर्ष्या विहीन (किसी से ईर्ष्या नहीं) शिक्षा के माध्यम से क-कहानी, ख-खेल, ग-गीत/गतिविधि, घ-घर जैसा वातावरण देकर मिशन को लागू कर रहे हैं।

नवाचार–‘क ख ग घ मिशन’ की विशेषताएं

क – कहानी

S T O R Y

- यह मिशन कहानी के माध्यम से शिक्षण करने को प्रेरित करता है, किसी भी विषय वस्तु को जब कहानी के माध्यम से सुनाया जाता है तो विद्यार्थियों में सोचने की क्षमता, भाषात्मक विकास, सृजनशीलता, कल्पनाशीलता, सुनने की क्षमता, एवं प्रश्न पूछने की क्षमता का विकास होता है ।

- कहानी केवल मनोरंजन का साधन नहीं बल्कि शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, थकान को कम करने का भी माध्यम है। साथ ही अनुभवजन्य ज्ञान को प्रदान करने एवं भावनात्मक जुड़ाव का भी माध्यम है।

- वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर सिद्ध हो चुका है कि कहानियाँ मस्तिष्क में ऑक्सीटोसिन हार्मोन के निर्माण को उत्तेजित करती हैं जो विश्वास, उदारता की भावनाओं को बढ़ाता है। कहानी बच्चों में कोर्टिसॉल (तनाव हार्मोन) की मात्रा को कम करती है जिससे बच्चों में चिंता, तनाव, अवसाद की कमी आती है।

क कहानी

छात्रों पर प्रभाव

IMPACT

- कहानी के माध्यम से बच्चों की शब्दावली में वृद्धि, भाषा कौशल, सुनने की क्षमता, बोलने की क्षमता का विकास होता है । "सत्कारं समनुप्राप्य कथाभिरभिरञ्जयन्" वैज्ञानिक शोध में पाया गया है कि पाँच सप्ताह तक प्रतिदिन कहानी सुनने से किशोरों में चिंता और अवसाद में कमी आई।

- कहानियाँ बालकों को आकर्षित करती हैं, आनंददायक शैक्षिक वातावरण का निर्माण करती हैं ।

- अतिथि सत्कार की एक शास्त्रीय रीति है और कहानी/कथा पठन उस विधि का महत्वपूर्ण अंग है। आज के भागदौड़ के जीवन में थकान एक सामान्य समस्या बन चुकी है। चाहे वह मानसिक हो, भावनात्मक हो या शारीरिक। हर व्यक्ति कभी न कभी इससे प्रभावित होता है। ऐसे में कहानी कहने की कला, जो सदियों से मानव संस्कृति का हिस्सा रही है।

क कहानी

बिजली हम बचाएंगे

लाइट बोली – रुको, सुनो । जब तुम्हारा काम इस कमरे में समाप्त हो गया है । तुम दूसरे कमरे में जा रहे हो, तो मुझे खुली क्यों छोड़ा ? तुम्हें ऊर्जा की बचत करनी चाहिए । दूसरी बात बिजली का बिल भी बढ़ेगा । पैसों की बचत भी करनी चाहिए ।

पंखा - मुझे भी बंद करो और यह बात घर में सभी को बताओ । बिजली बचाओ, देश बनाओ ।

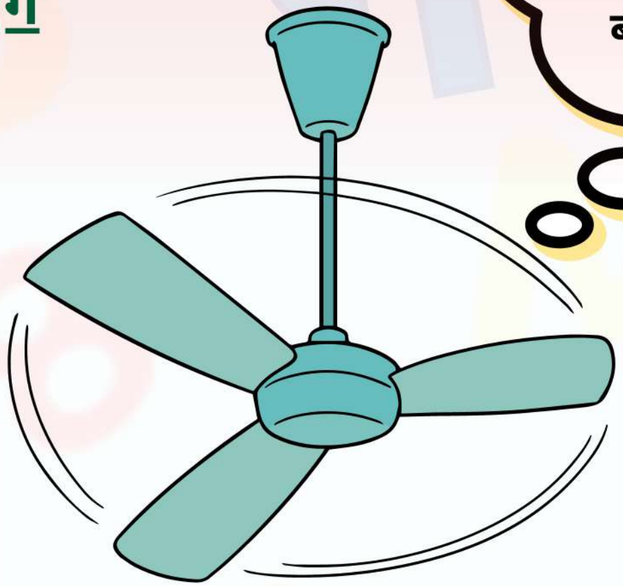

सबको हम सिखाएंगे।
बिजली हम बचाएंगे।

क कहानी

शिक्षक

- शिक्षकों को कहानी के प्रति जागरूक और स्वाध्याय के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए गिजुभाई द्वारा लिखित पुस्तक 'दिवास्वप्न' को पढ़ाया गया ।
- शिक्षक गिजुभाई के "परिचय स्थापित करने, कहानी सुनाने, छात्रों के पास बैठने, विद्यार्थियों और शिक्षकों को परस्पर निकट लाने, साथ खेलने, अभिभावकों से संपर्क, रमणीय रंगीन चित्रों वाली पुस्तकों का प्रयोग, कार्य को धैर्य से बार-बार करने से ही होगा" से प्रभावित होकर शिक्षण कार्य कर रहे हैं ।
- धर्मपाल द्वारा लिखित पुस्तक 'रमणीय वृक्ष'(The Beautiful Tree) का शिक्षकों ने स्वाध्याय किया।
- मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा शैक्षिक गुणवत्ता को उन्नत करने हेतु प्रत्येक शिक्षक के द्वारा मैथिलीशरण गुप्त द्वारा लिखित भारत-भारती पुस्तक का स्वाध्याय किया गया ।

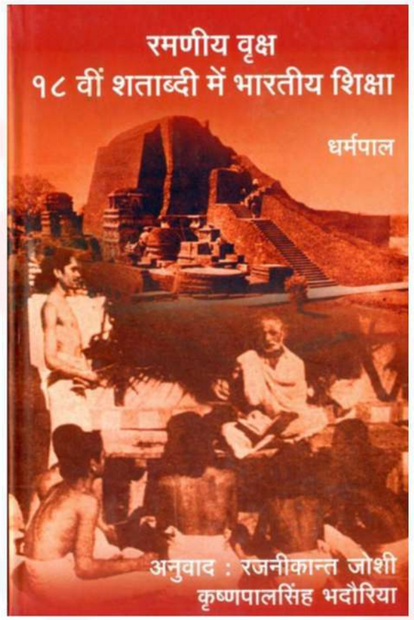

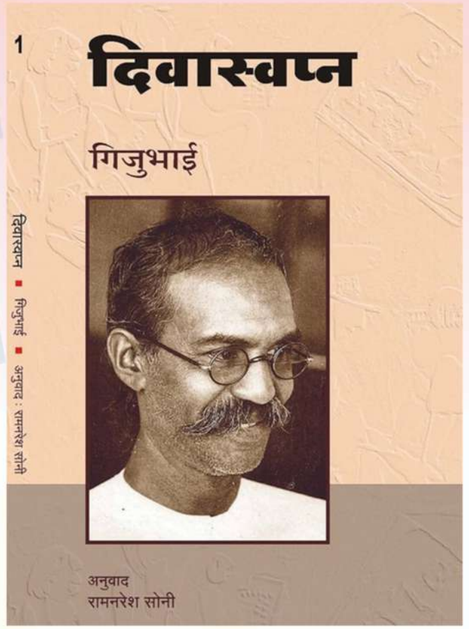

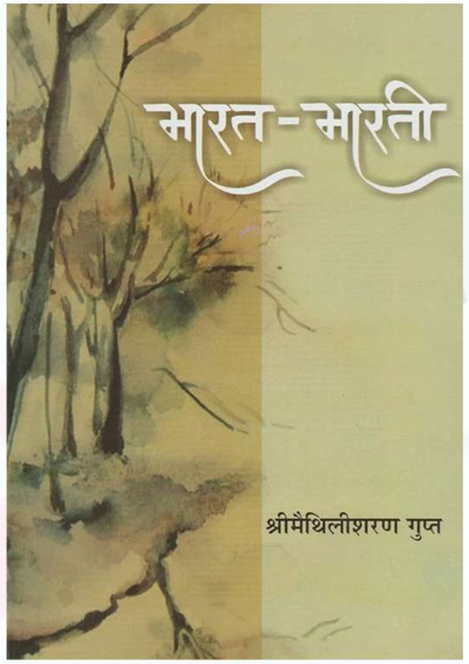

क कहानी

अभिभावक

- मिशन के द्वारा अभिभावकों को प्रेरित किया गया कि वह बालकों को पूर्वजों की कहानियाँ, आस-पास के परिवेश को बताना, अनुभवजन्य कहानियाँ, खेल आधारित कहानियाँ सुनाएं ताकि बालकों में आत्मीयता विकसित हो।
  - कहानियाँ अभिभावकों तथा बालकों में भावनात्मक जुड़ाव उत्पन्न करती हैं ।
  - मिशन की कहानी शिक्षण विधि से अभिभावक प्रभावित हुए तथा उन्होंने अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजना प्रारंभ किया ।
  - PTM/SMC की सक्रियता में वृद्धि हुई।

कहानियों की पुस्तके

ज्ञानसागर ग्रंथमाला

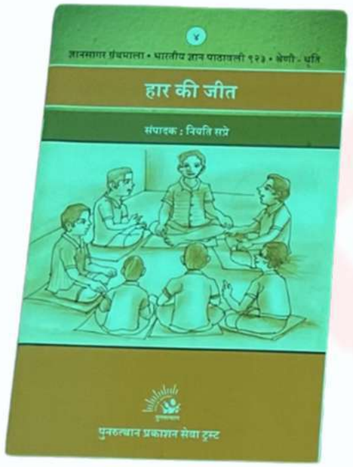

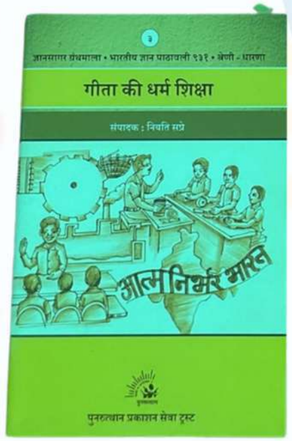

- ज्ञानसागर ग्रंथमाला के अंतर्गत 1051 ग्रंथ पर आधारित भारतीय ज्ञान पाठावली को 10 श्रेणियों में बाँटा गया है। जो प्रत्येक दिवस आयु वर्ग के अनुसार बालोपयोगी एवं बाल अनुकूलित कहानी व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से प्रेषित की जाती है तथा इनका वाचन विद्यालयों में होता है।
- जनपद में इसकी शुरुआत 1 जनवरी, 2025 से हुई है। अब तक 100 से अधिक कहानियाँ बच्चों तक पहुँच चुकी हैं। इसके अलावा मिशन शिक्षण संवाद के अंतर्गत नैतिक मूल्यों पर आधारित कहानियाँ व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से शिक्षकों तथा बच्चों तक पहुँचाई जाती हैं। इसका प्रार्थना सभा में वाचन होता है।

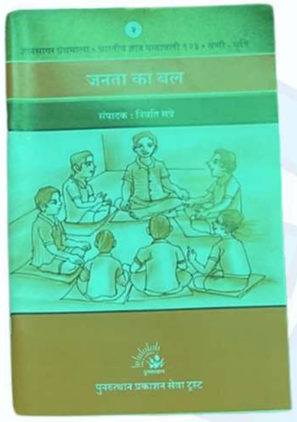

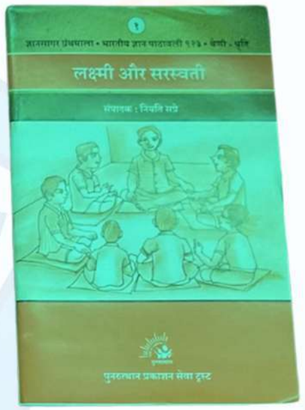

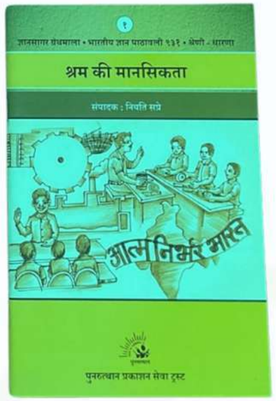

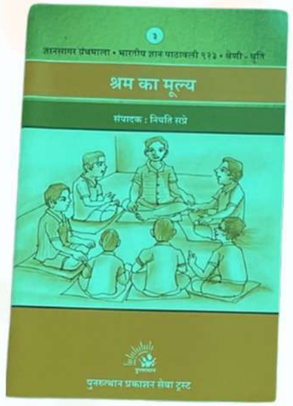

1. अंकुर (5,6 वर्ष)
2. पल्लव (7,8 वर्ष)
3. तीर्थ (9,10 वर्ष)
4. प्रसाद (11,12 वर्ष)
5. धृति (13,14,15 वर्ष)
6. धारणा (16, 17 वर्ष)
7. मेधा (18,19,20 वर्ष)
8. प्रज्ञा (20 वर्ष से ऊपर)
9. चिति (20 वर्ष से ऊपर)
10. परिधि (20 वर्ष से ऊपर

कहानी

खिलौनों ने सीख दी

एक दिन एक बच्चा अपने कमरे में खेल रहा था। अब खेलते-खेलते बच्चा ऊब गया और वह दरवाजे से बाहर निकल ही रहा था।

कहाँ जा रहे हो? हमें कौन उठाकर अंदर डालेगा।

“माँ डालेगी सब खिलौने अंदर”

माँ को बहुत काम होता है और तुम उनका काम और बढ़ाते हो। तुम पूरे दिन खेल के ऐसे ही हमको छोड़ कर चले जाते हो।

यह सुन कर बच्चे को अपनी त्रुटि समझ आई और उसने अपने सब खिलौने उठा कर डिब्बे में रख दिए।

ख खेल

- शिक्षा में खेल तथा खेल के द्वारा शिक्षा को परस्पर सम्बद्ध करते हुए हमने शून्य निवेश नवाचार के आधार पर पुनरुत्थान विद्यापीठ की पुस्तक 'एक हजार से अधिक भारतीय खेल' को लागू किया ।
- जनपद के सभी परिषदीय विद्यालयों में यह पुस्तक उपलब्ध है।
- खेल के द्वारा विद्यार्थियों का शैक्षणिक विकास तो होगा ही साथ ही उनका शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक विकास होगा ।
- खेल के द्वारा विद्यार्थियों में सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना का उदय होता है तथा सहयोग, सहानभूति के गुण भी विकसित होते हैं ।
- खेल खेलने से ग्रोथ हार्मोन उत्सर्जित होते हैं जो शरीर को मजबूत, लंबा, चौड़ा बनाते हैं तथा फील गुड हार्मोन एन्डोरफिन, डोपामाइन, सेराटोनिन हार्मोन उत्सर्जित होते हैं जो मानसिक रूप से स्वास्थ्य रखने में अत्यंत सहायक होते हैं ।

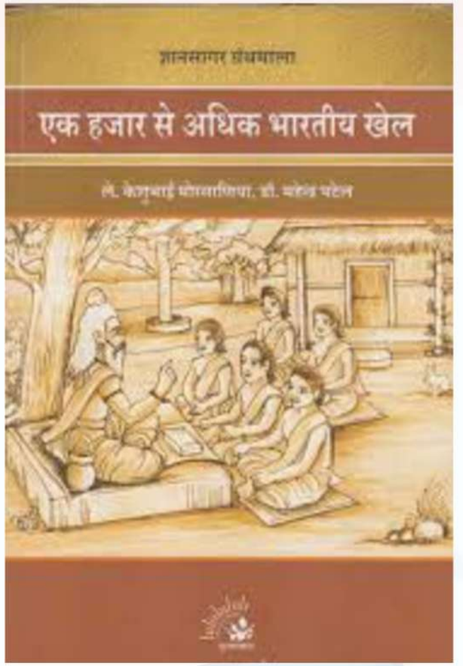

खेल

एक हजार से अधिक भारतीय खेल पुस्तक से

अध्याय 5 खेल संख्या -32.

अंतिम जीत हमारी-: वर्तुल पर खड़े तमाम बच्चों को 1-2-3 क्रमांक दीजिए। खेल खिलवानेवाला 1 अंक बोलेगा, उसी अकं के बच्चे वर्तुल की परिक्रमा करेंगे और उसके आगेवाले बच्चे को स्पर्श करने का प्रयत्न करेंगे। जिस बच्चे को स्पर्श हो जाए वह बच्चा आउट होगा। तब तक परिक्रमा चालु रहेगी जब तक अंकवाला एक ही बच्चा बचा रहे। इस प्रकार दूसरे अकं का नंबर आएगा। अंत में तीनों अंक के विजेता बच्चों की स्पर्धा रहेगी।

ख खेल के मैदान

- जनपद सम्भल में खेल के मैदानों की चुनौती है। मिशन का उद्देश्य प्रत्येक विद्यालय में खेल के मैदान को विकसित करना है ।
- जिन विद्यालयों के पास भूमि उपलब्ध है वहाँ आउटडोर मैदान तथा जहां भूमि उपलब्ध नहीं है वहाँ इन्डोर मैदान बनाए जा रहे हैं ।

मैदानों के प्रकार

जनपद सम्भल में खेल के मैदानों को तीन भागों में विभाजित किया गया है -

छोटे मैदान
(250 वर्ग मीटर तक)

मध्यम मैदान
(250-750 वर्ग मीटर तक)

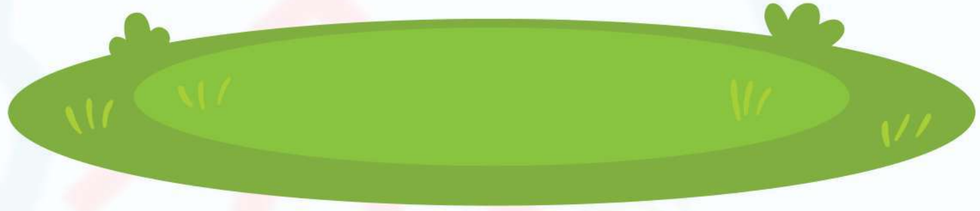

बड़े मैदान
(750 वर्ग मीटर से अधिक)

खेल के मैदान

इनडोर मैदान

कैरम, शतरंज, लूडो, टेबल टेनिस, जेंगा, मोनोपॉली

आउट्डोर मैदान

कबड्डी, फुटबॉल, हॉकी, वॉलीबाल, क्रिकेट, खो-खो

गीत/गतिविधि

1. गीत/गतिविधि मानसिक स्वास्थ्य का सशक्त माध्यम है, मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही देश का आदर्श नागरिक बन सकता है।
2. प्राथमिक कक्षाओं में वर्णमाला सिखाना, शब्द ज्ञान कराना, गीत-संगीत के माध्यम से अत्यंत सरल होता है ।
3. बच्चों को वर्णमाला सीखने के लिए अक्षर गीत का प्रयोग किया जा रहा है ।
4. गीत-प्रेम, सुख, दुःख, क्रोध, हर्ष से संबंधित होते हैं यह बच्चों को भावनाओं को समझने तथा भावनाओं को अभिव्यक्त करने में सहायक होते हैं ।
5. गीत में संगीत तथा नृत्य जैसी शारीरिक गतिविधियां शामिल होती हैं जिसके फलस्वरूप शारीरिक विकास भी होता है।
6. गीत के माध्यम से दोहराना, कंठस्थीकरण (Memorization) की प्रवृति बढ़ती है जिससे स्मृति शक्ति तीव्र होती है।
7. ग्राम पंचायतों के वाद्य यंत्रों का विद्यालयों में शिक्षा के उन्नयन में सदुपयोग किया जा रहा है ।

गीत

विद्यालय के बच्चों द्वारा स्वरचित गीतों को 'श्रीकृति' पी.एम. श्री पत्रिका में प्रकाशित किया गया, जिससे उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन मिला।

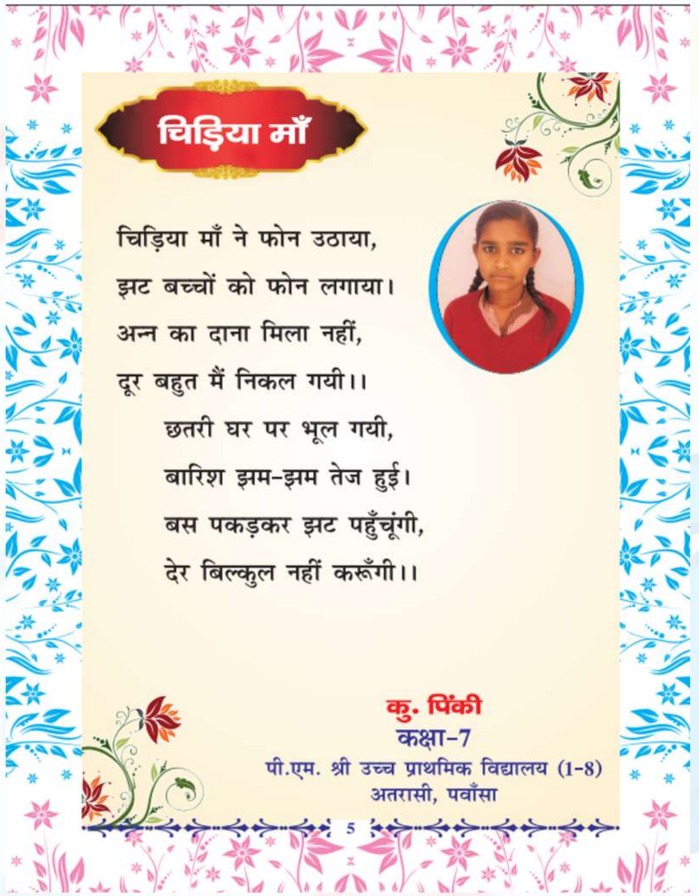

चिड़िया माँ

चिड़िया माँ ने फोन उठाया,
झट बच्चों को फोन लगाया।
अन्न का दाना मिला नहीं,
दूर बहुत मैं निकल गयी।।

छतरी घर पर भूल गयी,
बारिश झम-झम तेज हुई।
बस पकड़कर झट पहुँचूंगी,
देर बिल्कुल नहीं करूँगी।।

कु. पिंकी
कक्षा-7
पी.एम. श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय (1-8)
अतरासी, पवाँसा

5

घर जैसा वातावरण

विद्यालय में घर जैसा वातावरण बनाने का उद्देश्य बच्चों को एक सुरक्षित, सुविधाजनक और सहज सीखने का वातावरण प्रदान करना है। यह बच्चों को विद्यालय में आने और सीखने की रुचि रखने में सहयोग करता है, जिससे उनका समग्र विकास होता है।

1

सुरक्षा और आनन्द

घर जैसा वातावरण बच्चों को विद्यालय में सुरक्षित और सहज अनुभूति करने में सहयोग करता है। यह उन्हें विद्यालय में चिंता या डर के बिना सीखने पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है।

2

सीखने में रुचि

जब बच्चे विद्यालय को अपने घर की तरह अनुभूत करते हैं, तो वे सीखने में अधिक रुचि रखते हैं। उन्हें विद्यालय में अधिक समय तक रहना और सीखने के नए अनुभव प्राप्त करना पसंद होता है।

3

समग्र विकास

घर जैसा वातावरण बच्चों के सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास में सहयोग करता है। यह उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान करता है और उन्हें अपने साथियों के साथ सहयोग करना सिखाता है।

4

सहयोग

जब बच्चे विद्यालय को एक परिवार की तरह अनुभूत करते हैं, तो वे एक दूसरे का सहयोग करने और सीखने में एक साथ कार्य करने के लिए अधिक इच्छुक होते है।

घर जैसा वातावरण कैसे बनाया

1. विद्यालय की शिक्षिकाओं को अब बच्चे, विद्यालय के अन्य कर्मचारी तथा ग्रामवासी 'दीदी' कहकर संबोधित करते हैं। कक्षा ४ की पुस्तक फुलवारी के पाठ अपने आप – १ में भी 'टीचर दीदी' शब्द का प्रयोग किया गया है। यह संबोधन जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, सम्भल के कार्यालय पत्रांक 2691-98 दिनांक 10 जुलाई 2024 द्वारा औपचारिक रूप से लागू किया गया है।
2. 'मेरा गाँव–मेरा घर' (एक्सपोजर विजिट) कार्यक्रम के अंतर्गत बच्चे गाँव के खेत, पंचायत भवन, डाकघर, स्वास्थ्य केंद्र व पर्यटन स्थलों पर धुमतें है तो गाँव के प्रति आत्मीयता विकसित होती है।
3. शिक्षक कहते हैं – 'मैं बनूंगा गीजूभाई'; उन्हें गीजूभाई की दिवास्वप्न पुस्तक पढ़ाई गई है एवं उसमें प्रयुक्त शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण भी दिया गया है।
4. तिथि भोजन में माध्यम से विद्यालय में घर जैसा वातावरण का निर्माण हो रहा है तिथि भोजन में जनपद सम्भल प्रदेश में प्रथम स्थान पर है जिससे जनसामान्य, शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों के मध्य प्रेम और आत्मीय सम्बन्धों का निर्माण हुआ है।

घर जैसा वातावरण कैसे बनाया

शासनादेश को केवल पढ़ा नहीं गया, बल्कि उसे जीवंत करते रोचक रूप में दिया तथा 'मेरा विद्यालय-स्वच्छ विद्यालय' जैसी गतिविधियों के माध्यम से शिक्षक छात्रों ने मिलकर सफ़ाई करके व्यवहार में उतारा — यह नवाचार की मिसाल है।

बेसिक शिक्षा अनुभाग-5 के शासनादेश संख्या 118/68-5-2021-11/2021, दिनांक 09 फरवरी 2021 एवं संख्या-1174/68-5-2023, दिनांक 01.07.2023 विद्यालयों में 'मेरा विद्यालय-स्वच्छ विद्यालय' अवधारणा लाग किये जाने के सम्बन्ध में।

निपुण संभल अभियान
(शासनम् अनुशासनम् विमर्श- 4)

"मेरा विद्यालय-स्वच्छ विद्यालय"

अवधारणा: बच्चों में विद्यालयों परिवेश की समग्र स्वच्छता के प्रति **स्वामित्व** एवं **नैतिक उत्तरदायित्व** की भावना विकसित कर **व्यवहार में परिवर्तन** की भावना का विकास।

प्रमुख अंग

माता-पिता, शिक्षकों एवं समुदाय के प्रति **सम्मान भावाना** का विकास।

अनुशासन, दायित्व, देखभाल की भावना और नेतृत्व क्षमता का विकास करना।

➢ शौचालयों और मूत्रालयों की सफाई :

- परिषदीय विद्यालयों में बालक-बालिकाओं के शौचालयों और मूत्रालयों की **क्रियाशीलता और सफाई** को सुनिश्चित करें।
- राजस्व ग्राम में नियुक्त पंचायती राज विभाग के सफाई कर्मचारियों के माध्यम से **स्वच्छता व्यवस्था** लागू करें।
- शौचालयों की **नियमित सफाई और पानी की आपूर्ति** सुनिश्चित करें।
- हाथ धोने के लिए **साबुन और तौलिया** की समुचित व्यवस्था करें।

➢ विद्यालय परिसर की सफाई :

- घास की कटाई, कूड़े की सफाई, पेड़ों की छटाई और गढ़ड़ों की सफाई सुनिश्चित करें। गढ़ड़ों में जल भराव की स्थिति में मिट्टी डलवाएं।

➢ कक्षा कक्षों की सफाई :

- दीवारों, मेज, कुर्सियों की गंदगी और जाले की सफाई करें।
- फर्नीचर और टाट-पट्टी को सुव्यवस्थित करें और आवश्यक मरम्मत कराएं।

➢ गंदगी फैलाने पर रोक :

- विद्यालय परिसर में गंदगी फैलाने को प्रतिबंधित करें और बच्चों को इसके लिए प्रेरित करें।
- कूड़ा निर्धारित डस्टबिन में डालने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

➢ स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था :

- पानी की टंकी, हैंडपम्प और नल की उचित सफाई करें। टंकी का ढक्कन ठीक से लगाएं और खुला न रखें।

➢ मध्यान्ह भोजन के रसोई घर की सफाई :

- रसोईघर के फर्श की धुलाई, दीवारों की सफाई और बर्तनों की समुचित सफाई करें।
- खाद्यान्न और भोज्य पदार्थों को स्वच्छ और सुरक्षित रखें।
- खाना बनाने से पूर्व रसोइयों द्वारा हाथ धोने और एप्रेन पहनने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।
- खांसी या जुकाम की समस्या वाले रसोइयों को खाना बनाने में न लगाएं।

➢ बच्चों की स्वच्छता :

- खाना खाने से पूर्व बच्चों के हाथ साबुन से धोने की व्यवस्था करें।
- खाना खाने की जगह को साफ-सुथरा और कीटाणुरहित बनाएं।

➢ शिक्षकों / छात्रों की गतिविधियाँ / रणनीतियां:

१)करके सीखना - (Learning By Doing)

- **निर्धारित समय सारिणी** में सभी छात्र-छात्राएं और अध्यापक द्वारा स्वच्छता कार्यों को सीखने और अभ्यास में भाग लिया जाये।
- **साफ–सफाई के प्रबन्धन हेतु विशेष नवचार** – सफाई के लिए आवश्यक संसाधनों की सूची तैयार की जाए, जिसमें पर्याप्त संख्या में झाड़ू, पोछे, डस्ट पैन, सफाई के रसायन और कूड़ेदान आदि शामिल होंगे। इनकी आपूर्ति और रखरखाव की व्यवस्था की जाएगी।
- **बच्चों में व्यवहार परिवर्तन के रूप में क्रियान्वित करना:** विद्यालय की **समय सारिणी** में स्वच्छता कार्यों को **अनिवार्य रूप से जोड़ा जाए,** जिसमें सभी छात्रों के साथ-साथ अध्यापक (देखभाल, सुरक्षा और सीखने-सिखाने के **प्रभारी व्यक्ति**)भी अपने **परिवेश की स्वच्छता** के प्रति उत्तरदायी बनें और उनके द्वारा स्वच्छता गतिविधियों में भाग लिया जाए।

२)कार्य करने से पहलें सोचें - (Think Before Act)

- शिक्षक **अनुकूल** वातावरण बनाएं और **बातचीत** तथा **अनौपचारिक तरीके** से सभी छात्रों को **स्वच्छता** कार्यों के **महत्व** और **प्रक्रिया** को **समझने** और **सीखने** की सुविधा प्रदान करेंगे, ताकि **स्वच्छता कार्यों** को **एक शैक्षणिक गतिविधि के रूप में विकसित** किया जा सके।
- शिक्षक को यह **समझना अत्यंत आवश्यक** है कि विद्यालय में सफाई कार्य **क्यों और किस प्रकार** किया जाना चाहिए, क्योंकि इस पहल का **नेतृत्व** शिक्षक को ही करना है।
- शिक्षक द्वारा बच्चो का **नेतृत्व/मार्गदर्शन** करते हुये उनके **अनुकूल सामग्री/उपकरण** झाड़ू, ब्रश आदि को आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुरूप उपयोग करने की प्रक्रिया से परिचित कराना चाहिए।

३)करने के लिए सूची - (To do List)

- विद्यालय परिसर कब, कहाँ और कैसे सफाई कार्य करना है यह स्थानीय **परिस्थितियों** को **ध्यान में रखते हुए सूची तैयार की जाएं**, ताकि कार्य **कुशलतापूर्वक** और **सुरक्षित रूप से संपन्न हो सके।** विद्यालय परिसर के साथ – साथ कक्षा-कक्षों की साफ-सफाई पर ध्यान केन्द्रित किया जाना आवश्यक है।
- **छात्र सदैव समूह** में कार्य करें **तथा बच्चों के लिये खतरनाक हो अथवा उनकी क्षमता से बाहर हो ऐसी कोई गतिविधि न करायी जायें।**
- **15 से 20 मिनट की गतिविधियां ही की जाये ताकि बच्चे सामूहिक गतिविधियों को आनन्द के साथ करें, न कि इसे बोझिल समझे।**

४)कैसे और किस प्रकार सामग्री का उपयोग करने के लिए सीखना-

(Learning how to clean and what materials to use)

- बच्चों के **आयुवर्ग** एवं **शारीरिक क्षमता** के अनुसार सफाई सामग्री की व्यवस्था करें।
- सफाई-प्रक्रिया के समय **बचाव** हेतु अध्यापक एवं बच्चे के लिये **मास्क, दस्ताने आदि** की **व्यवस्था अवश्य करें।**
- **कम्पोजिट स्कूल ग्राण्ट** की धनराशि का **उपयोग किया जा सकता** है।
- **विशेष प्रयास करें** ताकि सामग्री की व्यवस्था अभिभावकों अथवा समुदाय द्वारा **दान/सहयोग** से की जा सके।

५)प्रशिक्षण और सह-प्रबन्धन (Training and Co-management):

- छात्रों को **छोटे समूहों** में प्रशिक्षित करते हुये प्रत्येक टीम को विशेष क्षेत्रों की सफाई कार्य का **उत्तरदायित्व** सौंपा जाए और **प्रत्येक टीम का लीडर** नियुक्त किया जाए।
  नोटः- इस प्रक्रिया का **महत्वपूर्ण चरण** है बच्चों में **नेतृत्व क्षमता** का विकास करना।
- **सफाई सत्र के समय बाल संसद, क्लास मॉनीटर को भी स्वच्छता कार्य में सम्मिलित किया जायेगा।**
- अध्यापक /नोडल शिक्षक द्वारा छात्रों को झाड़ू लगाना, पोछा लगाना और कूड़ा एकत्र करन के सही तरीके सिखाए तथा उपकरणों का उपयोग करना तथा किस कार्य हेतु कितने लोगों की आवश्यकता है इत्यादि सिखाए।
- **व्यवहार परिवर्तन एवं संचार : स्वच्छता शनिवार (स्वच्छता सत्र) में** नोडल शिक्षक द्वारा बच्चों के व्यवहार परिवर्तन हेतु छात्रों साबुन का प्रयोग, मासिक धर्म स्वच्छता, पानी की बचत, शौचालय का उपयोग शिष्टाचार इत्यादि विषयों के माध्यम से स्वच्छता कार्य हेतु प्रेरित किया जायें।

६) स्वच्छता को पवित्रता पर्व के रूप में आयोजित किया जाना:

(Celebrating cleanliness as holiness)

- विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों द्वारा स्थानीय निवासियों और समुदाय के सहयोग से **महत्वपूर्ण पर्वों** के समय अपने आस-पड़ोस की सफाई का अभियान चलाया जा सकता है। जैस- स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, गांधी जयंती, होली, दीपावली, विश्व जल दिवस (22 मार्च), विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून), ग्लोबल हैंडवाशिंग डे (15 अक्टूबर) और विश्व शौचालय दिवस (19 नवंबर) जैसे अवसरों पर यह अभियान संचालित किया जा सकता है। इस अभियान में विद्यार्थियों और समुदाय के बीच उत्साह एवं स्वामित्व की भावना को बढ़ावा देने के लिए **सार्वजनिक शपथ ग्रहण**, स्वच्छता संबंधी संगीत आदि का उपयोग किया जा सकता है।

➢ ध्यान देने योग्य बिन्दु:

- विद्यालय की साफ-सफाई की गतिविधियाँ **विद्यार्थियों द्वारा प्रतिदिन 15 से 20 मिनट की जाएंगी।**
- विद्यालय में संचालित स्वच्छता संबंधी गतिविधियों में प्रत्येक बच्चे को **बिना किसी भेदभाव के प्रतिभाग करना** चाहिए। अध्यापक द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सभी प्रकार की गतिविधियाँ सभी के लिए सहज हों।
- स्कूल में मौजूद प्रत्येक वयस्क न केवल विद्यार्थियों को सफाई अभियान में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करेंगे, बल्कि उनका मार्गदर्शन भी करेंगे और **स्वयं भी सक्रिय रूप से प्रतिभाग करेंगे।**
- शिक्षकों द्वारा विद्यालय परिसर में साफ किए जाने वाले क्षेत्रों का चिन्हांकन किया जाएगा एवं यथावश्यक सफाई कार्यों को सूचीबद्ध करते हुए विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह के लिए कुछ कार्यों को आवंटित कर उनका मार्गदर्शन किया जाएगा।
- नियमित अंतराल पर साप्ताहिक रूप से कक्षा/नोडल शिक्षक व्यवहार परिवर्तन संचार (बीसीसी) का संचालन करेंगे। सप्ताह में **एक दिन वॉश (WASH) व्यवहार और प्रणालियों पर ऑडियो-वीडियो या प्रिंट सामग्री** जैसे साबुन के साथ हाथ धोना, पानी की बचत, शौचालय का उपयोग, शिष्टाचार आदि का उपयोग किया जाएगा।
- जूनियर सेक्शन के सबसे छोटे बच्चों को किसी भी कठिन कार्य में नहीं लगाना चाहिए।
- विद्यार्थियों को निर्माण कार्य, रेट्रोफिटिंग, नवीनीकरण का काम, भारी काम, गहरी सफाई के क्षेत्र जैसे खतरनाक कार्यों में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए।
- सफाई के समय नोडल शिक्षक विद्यार्थियों के साथ रहेंगे तथा अपनी निगरानी में कार्य कराएंगे।

---------- निपुण भारत - निपुण सम्भल ----------

‘क ख ग घ मिशन’ के परिणाम

पीएम श्री/सम्भल श्री/अन्य सभी विद्यालयों पर प्रभाव

- जनपद सम्भल में 16 पीएम श्री एवं 144 सम्भल श्री विद्यालय हैं। मिशन के लागू होने के पश्चात विद्यालयों में शिक्षण स्तर में सुधार हुआ तथा नामांकन में वृद्धि हुई। दूरस्थ छात्रों की सुविधा हेतु अभिभावकों के द्वारा व्यक्तिगत/सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग किया जा रहा है। कुछ पीएम श्री विद्यालयों में समाज सेवियों के सहयोग से दूरस्थ ग्रामों से आने वाले छात्रों के लिए वैन की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।
- इस मिशन के परिणामस्वरूप बच्चे नि:संकोच एवं उत्साहपूर्वक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

महामहिम राज्यपाल महोदया द्वारा
पी.एम. श्री प्राथमिक विद्यालय इटायला माफी का भ्रमण

‘क ख ग घ मिशन’ के परिणाम

अभिभावक-शिक्षक बैठक (PTM)

अभिभावक-शिक्षक बैठक का आयोजन नियमित रूप से प्रारंभ हुआ है मिशन के लागू होने के उपरांत अभिभावकों में शिक्षकों पर विश्वास में वृद्धि हुई है जिससे परिषदीय विद्यालयों की गरिमा एवं महत्ता में लगातार वृद्धि हो रही है अभिभावकों के द्वारा विद्यालय से निरंतर संपर्क में रहने के कारण बच्चों की उपस्थिति पर अप्रत्याशित प्रभाव पड़ा है।

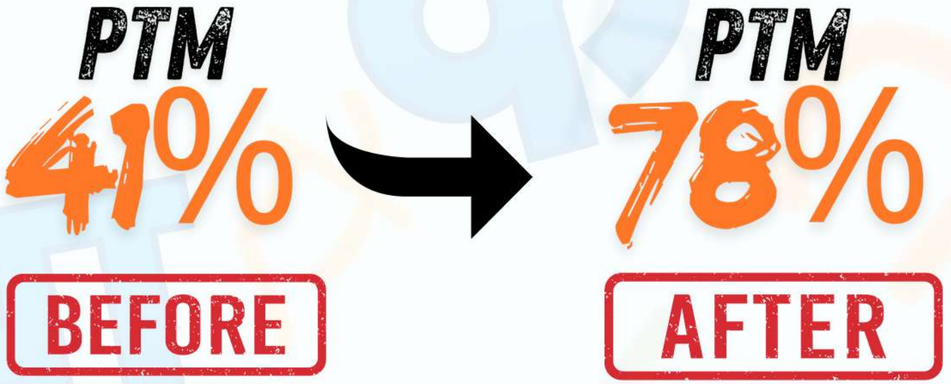

विद्यालय प्रबंध समिति (SMC) की सक्रियता

‘क ख ग घ मिशन’ लागू होने के पश्चात प्रत्येक विद्यालय में विद्यालय प्रबंध समिति की सक्रियता में वृद्धि हुई है। जिसके परिणामस्वरुप नामांकन, उपस्थिति, ठहराव में वृद्धि हो रही है तथा शिक्षा का गुणात्मक स्तर परिलक्षित हो रहा है।

PTM/SMC की उपस्थिति में वृद्धि हुई। PTM मे अभिभावकों की उपस्थिति मे 41% से 78% की वृद्धि हुई एवं SMC मीटिंग की आवृति त्रैमासिक से मासिक हुई।

‘क ख ग घ मिशन’ से शैक्षणिक प्रदर्शन / उपस्थिति/ठहराव / ड्रॉपआउट पर प्रभाव

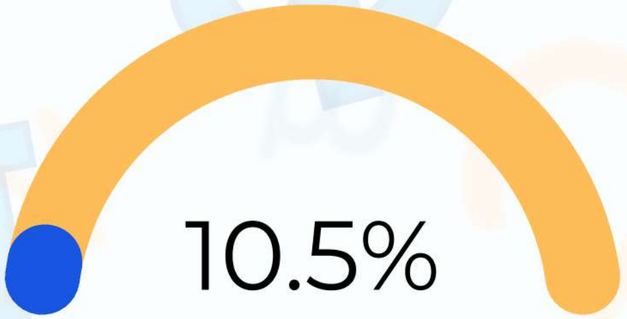

वर्ष 2023-24

वर्ष 2024-25

जनपद सम्भल मे निपुण विद्यालय

स्त्रोत : निपुण भारत मॉनिटरिंग सेल (NBMC)

‘क ख ग घ मिशन’ से शैक्षणिक प्रदर्शन / उपस्थिति/ठहराव / ड्रॉपआउट पर प्रभाव

ड्रॉपआउट छात्र की संख्या

स्त्रोत – यू-डायस पोर्टल (उ. प्र.)

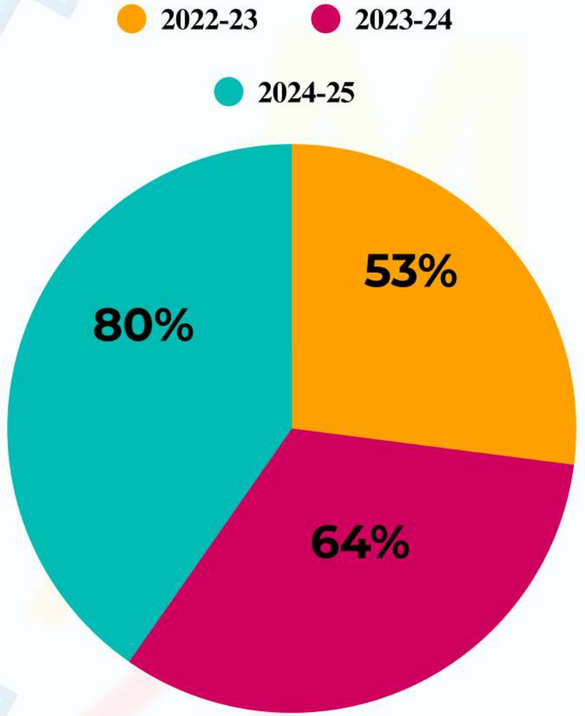

विद्यालयों मे छात्रो की औसत उपस्थिति

स्त्रोत –सी. एम. डैश बोर्ड, मासिक रिपोर्ट (उ. प्र.)

निपुण एवं शैक्षिक प्रदर्शन

'क ख ग घ मिशन' के लागू होने के उपरांत जनपद सम्भल के छात्रों के शैक्षिक स्तर में परिवर्तन हुआ बच्चे गणित और भाषा के साथ अन्य विषयों में भी निपुण हुए परिणामस्वरूप जनपद सम्भल का शैक्षिक प्रदर्शन उन्नत हुआ ।

शिक्षा पर प्रभाव

'मिशन' लागू होने के पश्चात शिक्षकों की शिक्षण विधियाँ भी परिवर्तित हुईं, शिक्षकों ने मनोवैज्ञानिक विधियों से पढ़ाना प्रारंभ किया तथा बालकेंद्रित शिक्षा के आधार पर शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जिससे शिक्षक-शिक्षार्थियों की अन्तः क्रियाएं प्रारम्भ हुईं और शिक्षण प्रक्रिया आनंददायक प्रक्रिया बन गयी ।

नवाचार की प्रेरणा

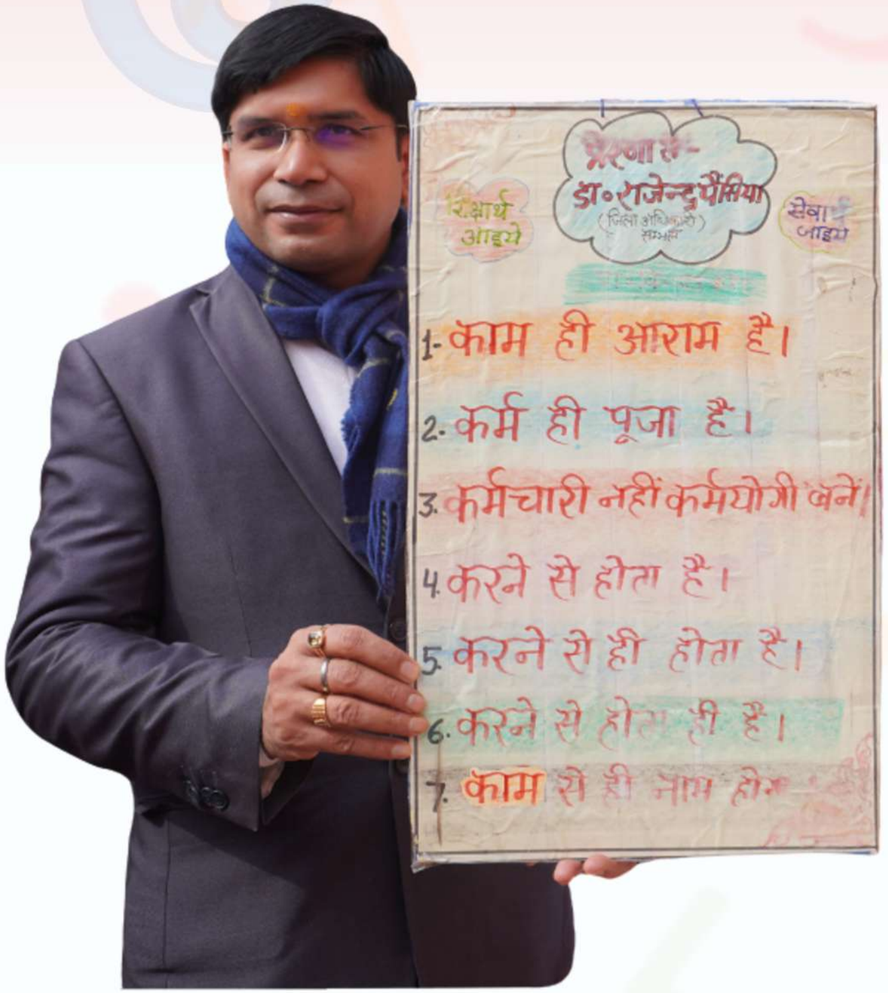

- जिलाधिकारी महोदय स्वयं 6 वर्ष शिक्षक रहे हैं तथा शिक्षा की समस्याओं से भलीभाँति परिचित हैं ।
- पुनरुत्थान विद्यापीठ के “भारत को जानो, भारत को मानो एवं भारतीय बनो” से प्रेरणा प्राप्त हुई ।
- भारतीय शिक्षा पद्धति (आई. के. एस.) में जिलाधिकारी महोदय द्वारा 14 वर्षों तक अनुसंधान किया गया है ।
- मुख्य विकास अधिकारी, फर्रूखाबाद के पद पर रहते हुए जिलाधिकारी महोदय द्वारा ‘उत्तिष्ठ शिक्षक प्रतिष्ठ भारत’, ‘इनोवेटिव फाइव स्टार स्कूल प्रोजेक्ट’ , ‘स्वर लय-ताल वंदना प्रोजेक्ट’, ‘मिशन प्रेरणा’ प्रारंभ किया गया
- संबंधित ‘एक हजार से अधिक भारतीय खेल’ तथा अंकुर, पल्लव, तीर्थ, प्रसाद, धृति, धारणा, मेधा आदि पुस्तकों से प्रभावित होकर जनपद सम्भल में शैक्षिक उन्नयन हेतु सम्भल शैक्षिक क्रांति को क्रियान्वित करते हुए ‘क ख ग घ मिशन’ को प्रारंभ किया गया। यह नवाचार जनपद सम्भल के शिक्षा जगत में लोकप्रिय बन चुका है ।

समाचार पत्रों ने दिया नवाचार को स्थान

दैनिक
नेशनल एक्सप्रेस
हर खबर समय पर
epaper.nationalexpress.co.in
09 May 2025 - Page 5
.co.in संभल/अलीगढ़ एक्सप्रेस नई दिल्ली,

जनपद के परिषदीय विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में चलाया जा रहा है क, ख, ग, घ मिशन

क, ख, ग, घ मिशन के अन्तर्गत बच्चों को क से कहानी, ख से खेल तथा ग से गीत / गतिविधि, घ से घर जैसे वातावरण में दी जाती है शिक्षा

नेशनल एक्सप्रेस ब्यूरो

सम्भल बहजोई। जनपद सम्भल में जिलाधिकारी डॉ.राजेन्द्र पैंसिया के निर्देशन में क, ख, ग,घ मिशन चलाया जा रहा है। क, ख, ग, घ मिशन शैक्षिक क्रांति हेतु एक मिशन है जोकि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार, निपुण भारत, कायाकल्प, पीएम श्री विद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार है। इस मिशन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम 2022 को पूर्णतः लागू करना है। परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए क, ख, ग, घ मिशन महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है इस मिशन के अंतर्गत बच्चों को क से कहानी , ख से खेल , ग से गीत /गतिविधि , घ से घर जैसा वातावरण में शिक्षा एवं खेल के अवसर प्रदान किया जा रहे हैं ।यह मिशन 4 जुलाई 2024 को स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस के अवसर पर प्रारंभ किया गया। इस मिशन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत शारीरिक ,मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई ,संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक ,सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है ।31 दिसंबर 2024 तक जनपद के 16 पीएम श्री विद्यालयों और 144 संभल श्री विद्यालयों सहित 1289 विद्यालयों को इस मिशन से संतृप्त कर लिया गया है। इसी प्रकार आंगनबाड़ी केन्द्रों में भी क , ख, ग, घ चमक के अंतर्गत 4 जुलाई 2024 को 1762 आंगनबाड़ी केन्द्रों में यह मिशन आरं[भ] किया गया जिसे पुस्तकालय दिवस 2[...] अप्रैल 2025 को प्रतिशत संतृप्त क[र] लिया गया है। इस मिशन से पूर्व परिषदी[य] विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों [में] नामांकन की स्थिति , विधार्थियों क[ी] उपस्थिति, ठहराव ,भौति[क] संरचना,विद्यालयों का उबाऊ वातावरण खेल के मैदानों की स्थिति ,पुस्तकालय का उपयोग, बाल केंद्रित शिक्षा की स्थिति निम्न स्थिति में थी तथा इस कारण शिक्षक[ों] के आत्मविश्वास में भी कमी देखने क[ो] मिल रही थी। इस मिशन को इन स[भी] परिस्थितियों में सुधार के लिए जनपद [में] प्रारंभ किया गया।

परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए क, ख, ग, घ है महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ

*** जनपद के परिषदीय विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में चलाया जा रहा है क, ख, ग, घ मिशन**

उत्तम भारत संबाददाता

सम्भल बहजोई। जनपद सम्भल में जिलाधिकारी डॉ.राजेन्द्र पैंसिया के निर्देशन में क, ख, ग,घ मिशन चलाया जा रहा है। क, ख, ग, घ मिशन शैक्षिक क्रांति हेतु एक मिशन है जोकि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार, निपुण भारत, कायाकल्प, पीएम श्री विद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार है। इस मिशन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम 2022 को पूर्णतः लागू करना है। परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए क, ख, ग, घ मिशन महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है इस मिशन के अंतर्गत बच्चों

प्रदान किया जा रहे हैं । यह मिशन 4 जुलाई 2024 को स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस के अवसर पर प्रारंभ किया गया। इस मिशन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत शारीरिक ,मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई ,संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक ,सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है ।31 दिसंबर 2024 तक जनपद के 16 पीएम श्री विद्यालयों और 144 संभल श्री विद्यालयों सहित 1289 विद्यालयों को इस मिशन से संतृप्त कर लिया गया है। इसी प्रकार आंगनबाड़ी केन्द्रों में भी क , ख, ग, घ चमक के अंतर्गत 4 जुलाई 2024 को 1762 आंगनबाड़ी केन्द्रों में यह

'क, ख, ग, घ मिशन' से संभल में शिक्षा बनी आनन्द और उत्सव, डीएम डॉ. राजेन्द्र पैंसिया की अभिनव पहल से परिषदीय विद्यालयों का बदला स्वरूप

Posted By- (Mayank Pant(Reporter)) / 08-05-2025

Advertisement-

समाचार पत्रों ने दिया नवाचार को स्थान

पश्चिमी उत्तर प्रदेश
3

परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के लिए क, ख, ग, घ है महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ : डॉ. पैंसिया

बहजोई (एसएनबी)। जनपद सम्भल में जिलाधिकारी डॉ. राजेन्द्र पैंसिया के निर्देशन में क, ख, ग, घ मिशन चलाया जा रहा है। क, ख, ग, घ मिशन शैक्षिक क्रांति हेतु एक मिशन है जो कि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार, निपुण भारत, कायाकल्प, पीएम श्री विद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार है। इस मिशन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम 2022 को पूर्णतः लागू करना है।

जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने बताया परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए क, ख, ग, घ मिशन महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। इस मिशन के अंतर्गत बच्चों को क से कहानी, ख से खेल, ग से गीत, गतिविधि, घ से घर जैसा वातावरण में शिक्षा एवं खेल के अवसर प्रदान किए जा रहे हैं। यह मिशन 4 जुलाई 2024 को स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस के अवसर पर प्रारंभ किया गया। इस मिशन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है। 31 दिसंबर 2024 तक जनपद के 16 पीएम श्री विद्यालयों और 144 संभल श्री विद्यालयों सहित 1289 विद्यालयों को इस मिशन से संतृप्त कर लिया गया है। इसी प्रकार आंगनबाड़ी केन्द्रों में भी क, ख, ग, घ चमक के अंतर्गत 4 जुलाई 2024 को 1762 आंगनबाड़ी केन्द्रों में यह मिशन आरंभ किया गया जिसे पुस्तकालय दिवस 23 अप्रैल 2025 को प्रतिशत संतृप्त कर लिया गया है।

इस मिशन से पूर्व परिषदीय विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों मे नामांकन की स्थिति, विद्यार्थियों की उपस्थिति, ठहराव, भौतिक संरचना, विद्यालयों का उबाऊ वातावरण, खेल के मैदानों की स्थिति, पुस्तकालयों का उपयोग, बाल केंद्रित शिक्षा की स्थिति निम्न स्थिति में थी तथा इस कारण शिक्षकों के आत्मविश्वास में भी कमी देखने को मिल रही थी। इस मिशन को इन सब परिस्थितियों में सुधार के लिए जनपद में प्रारंभ किया गया।

सड़क हाद मजदूरों

बिजनौर (एसएनबी कोतवाली मार्ग पर ग्राम कार की टक्कर में ती गयी। पुलिस ने श पोस्टमार्टम के लिए भे

क्षेत्र के गांव फर्र महमूदपुर निवासी सईद नूरआलम एक ही बाइ करने के लिए जा र फुलसंदा के पास पहुंचे रही इको गाड़ी ने उनक टक्कर मार दी, टक्क कोतवाली के प्राथमि जाया गया, जहां चिकि सईद को मृत घोषित नूरआलम को जिला हि दिया गया। पुलिस क्षेत्र बताया कि घायल तीस उपचार के दौरान मौ बाइक सवार तीनों के विधिक कार्रवाई शुरू

केन कमिश्नर ने जारी की गन्ने की फसल

एसडीएम ने ट

परिषदीय विद्यालयों एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में चलाया जा रहा है क, ख, ग, घ, मिशन

रामवीर सिंह चौहान/ब्यूरो संभल

सम्भल/बहजोई (विधान केसरी)। जनपद सम्भल में जिलाधिकारी डॉ. राजेन्द्र पैंसिया के निर्देशन में क, ख, ग, घ मिशन चलाया जा रहा है। क, ख, ग, घ मिशन शैक्षिक क्रांति हेतु एक मिशन है जोकि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार, निपुण भारत, कायाकल्प, पीएम श्री विद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु तैयार है। इस मिशन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम 2022 को पूर्णतः लागू करना है। परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए क, ख, ग, घ मिशन महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है इस मिशन के अंतर्गत बच्चों को क से कहानी, ख से खेल, ग से गीत/गतिविधि, घ से घर जैसा वातावरण में शिक्षा एवं खेल के अवसर प्रदान किया जा रहे हैं। यह मिशन 4 जुलाई 2024 को स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस के अवसर पर प्रारंभ किया गया। इस मिशन का उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई, संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है। 31 दिसंबर 2024 तक जनपद के 16 पीएम श्री विद्यालयों और 144 संभल श्री विद्यालयों सहित 1289 विद्यालयों को इस मिशन से संतृप्त कर लिया गया है।

इसी प्रकार आंगनबाड़ी केन्द्रों में भी क, ख, ग, घ चमक के अंतर्गत 4 जुलाई 2024 को 1762 आंगनबाड़ी केन्द्रों में यह मिशन आरंभ किया गया जिसे पुस्तकालय दिवस 23 अप्रैल 2025 को प्रतिशत संतृप्त कर लिया गया है।

इस मिशन से पूर्व परिषदीय विद्यालय एवं आंगनबाड़ी केन्द्रों में नामांकन की स्थिति, विद्यार्थियों की उपस्थिति, ठहराव, भौतिक संरचना, विद्यालयों का उबाऊ वातावरण, खेल के मैदानों की स्थिति, पुस्तकालयों का उपयोग, बाल केंद्रित शिक्षा की स्थिति निम्न स्थिति में थी तथा इस कारण शिक्षकों के आत्मविश्वास में भी कमी देखने को मिल रही थी। इस मिशन को इन सब परिस्थितियों में सुधार के लिए जनपद में प्रारंभ किया गया।

संभल के परिषदीय विद्यालयों और आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों की शिक्षा को रुचिकर बनाने के लिए खास अभियान

परिषदीय स्कूलों में बच्चों को भा रही क,ख,ग,घ की नई परिभाषा

भीष्म सिंह देवल ,संभल

- क से कहानी, ख से खेल, ग से गीत और घ से घर जैसा माहौल के थीम पर निखारी जा रही बच्चों की प्रतिभा
- जिलाधिकारी डा. राजेंद्र पैंसिया ने संभाली है अभियान की कमान

अमृत विचार: क,ख,ग,घ की परिभाषा की बात करें तो सभी का जवाब होगा क से कबूतर और ख से खरगोश, लेकिन संभल जनपद के 1289 परिषदीय विद्यालयों और 1762 आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों के लिए इन शब्दों के मायने कुछ अलग ही हैं। इन बदले मायनों की वजह से हालात भी यहां ऐसे बदले हैं कि सुबह को दिन निकलते ही बच्चे इस बात का इंतजार करते हैं कि कब समय हो और वह अपने स्कूल, यानि क,ख,ग,घ वाले माहौल में पहुंचें।

पीएम श्री विद्यालय में बच्चों व स्टाफ के साथ मौजूद डीएम डा. राजेंद्र पैंसिया,बीएसए अलका शर्मा। ● अमृत विचार

अक्सर देखने को मिलता है कि छोटा बच्चा स्कूल जाने से कतराता है, माता पिता हाथ पकड़कर उसे स्कूल लेकर जाते हैं तो वह रास्ते भर रोता रहता है। स्कूल न जाना पड़े इसके लिए कई बार बच्चा बीमारी का झूठा बहाना बना देता है। जनपद के परिषदीय विद्यालयों के बच्चे स्कूल जाने से न कतराएं, बल्कि दिन निकलते ही स्कूल जाने के लिए लालायित हों,इसके लिए संभल जनपद में जिलाधिकारी डा. राजेंद्र पैंसिया ने खास अभियान शुरु कराया है। अभियान का नाम है क, ख, ग,घ मिशन। इस मिशन के तहत क,ख,ग,घ की नई परिभाषा से बच्चों को जोड़ा गया तो परिषदीय स्कूलों के हालात बदल गये। इस मिशन के तहत क से कहानी, ख से खेल , ग से गीत या गतिविधि और घ से घर जैसे वातावरण में शिक्षा का माहौल परिषदीय स्कूलों में तैयार किया जा रहा है। 4 जुलाई 2024 को स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस के अवसर पर प्रारंभ किये गये इस मिशन का उद्देश्य बच्चों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके अंतर्गत बच्चों के शारीरिक ,मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई ,संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक ,सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है।

परिषदीय विद्यालय ही नहीं आंगनबाड़ी केंद्र भी मिशन में शामिल

संभल। 31 दिसंबर 2024 तक जनपद के 16 पीएम श्री विद्यालयों और 144 संभल श्री विद्यालयों सहित 1289 विद्यालयों को क,ख,ग,घ मिशन से जोड़ लिया गया है। इतना ही नहीं आंगनबाड़ी केन्द्रों मे भी क , ख, ग, घ चमक के अंतर्गत 4 जुलाई 2024 को 1762 आंगनबाड़ी केन्द्रों मे यह मिशन आरंभ किया गया। पुस्तकालय दिवस 23 अप्रैल 2025 को शत प्रतिशत संतृप्त कर लिया गया है।

पहल

डीएम बोले, विद्यार्थियों को क से कहानी, ख से खेल, ग से गीत व घ से घर जैसे वातावरण में दी जाती है शिक्षा

विद्यालयों व आंगनबाड़ी केंद्रों में चलाया जा रहा है क, ख, ग, घ मिशन

संवाद न्यूज एजेंसी

बहजोई। जिले भर के परिषदीय विद्यालयों व आंगनबाड़ी केंद्रों में क, ख, ग, घ मिशन चलाया जा रहा है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए जिले में यह पहल की गई है।

यह जानकारी देते हुए जिलाधिकारी डॉ. राजेंद्र पैंसिया ने बताया कि क, ख, ग, घ मिशन शैक्षिक क्रांति के लिए एक मिशन है, जो कि भारत सरकार तथा उत्तर प्रदेश सरकार, निपुण भारत, कायाकल्प, पीएम श्री विद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए तैयार है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए जिले में की गई यह पहल

उन्होंने बताया कि इस मिशन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या कार्यक्रम 2022 को पूरी तरह से लागू करना है। परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए क, ख, ग, घ मिशन महत्वपूर्ण आधार स्तंभ है। इस मिशन के तहत बच्चों को क से कहानी , ख से खेल, ग से गीत व घ से घर जैसा वातावरण में शिक्षा व खेल के अवसर प्रदान किया जा रहे हैं।

डीएम ने बताया कि मिशन 4 जुलाई 2024 को स्वामी विवेकानंद स्मृति दिवस के मौके पर शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना है। इसके तहत विद्यार्थियों में शारीरिक ,मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, भाषाई ,संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सांस्कृतिक ,सामाजिक विकास के साथ-साथ जीवन में उपयोगी आवश्यक कौशलों का विकास किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि 31 दिसंबर 2024 तक जिले के 16 पीएम श्री विद्यालयों और 144 संभल श्री विद्यालयों समेत शेष सभी विद्यालयों को इस मिशन से संतृप्त कर लिया गया है। इसी प्रकार आंगनबाड़ी केन्द्रों में भी क , ख, ग, घ चमक के तहत 4 जुलाई 2024 को 1762 आंगनबाड़ी केन्द्रों में यह मिशन शुरू किया गया था। इसे भी 23 अप्रैल 2025 को पुस्तकालय दिवस पर शत प्रतिशत संतृप्त कर लिया गया है।

उन्होंने बताया कि इस मिशन से पूर्व परिषदीय विद्यालयों व आंगनबाड़ी केंद्रों में नामांकन की स्थिति, विधार्थियों की उपस्थिति, ठहराव, भौतिक संरचना, खेल के मैदानों की स्थिति ,पुस्तकालयों का उपयोग व बाल केंद्रित शिक्षा निम्न स्थिति में थी। इसके कारण शिक्षकों के आत्मविश्वास में भी कमी देखने को मिल रही थी। इस मिशन को इन सब परिस्थितियों में सुधार के लिए जिले में शुरू किया गया है।

धन्यवाद!

डॉ राजेन्द्र पैंसिया
जिलाधिकारी, सम्भल